Tuesday, March 01, 2011 12:01:37 PM

लोकतंत्र का नया शास्त्र जरूरी

2/28/2011 7:17:34 AM

Change font size: | Print E-mail Comments Rating SHARE Bookmark

.. मसला दुनिया भर का है, लेकिन दृष्टि यूरोपीय है. लोकतंत्र के नाम पर अश्वेत दुनिया को यूरोप और उत्तरी अमरीका की जीवन शैली दिखायी जा रही है, पश्चिमी उदारवार की घुट्टी पिलायी जा रही, पूंजीवाद का व्याकरण सिखाया जा रहा है.

पहले ट्यूनीशिया, फ़िर मिस्र् और अब लीबिया. तो क्या लोकतंत्र की बयार अरब दुनिया तक पहुंचेगी? लोकतंत्र के ठेकेदार बड़ी मासूमियत से यह सवाल पूछते हैं. सवाल में संदेह का बीज छुपा है- क्या मुसलिम समाज अपने आप को आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप ढाल पायेगा? लोकतंत्र के हर पश्चिमी विशेषज्ञ के पास इन दकियानूसी समाजों को लोकतांत्रिक बनाने के नुस्खे हैं.

यहां लोकतंत्र का भविष्य जो भी हो, लोकतंत्र के पंडों-पुजारियों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है.चाहे काशी हो, अजमेर शरीफ़ या फ़िर रोम, इस दुनिया का हर पवित्र विचार देर-सबेर एक व्यवसाय बन जता है. पंडों की फ़ौज के साथ एक प्रतिष्ठान उस पर काबिज हो जाता है. यही लोकतंत्र के साथ हुआ है. गोरी दुनिया ने लोकतंत्र के विशेषज्ञों की एक फ़ौज तैयार कर रखी है.

जैसे ही तख्तापलट की गर्द छंट जायेगी और हवाई अड्डे सुरक्षित हो जायेंगे, वैसे ही ये रायबाज (‘कंसलटेंट’ को और क्या कहा जाये?) टिड्डियों के दल की तरह उतरने लगेंगे. देश का नाम भले न जानते हों, उसे लोकतांत्रिक संविधान का खाका बनाकर देने को तत्पर रहेंगे. जीवन में एक दिन भी चाहे राजनीति न की हो, राजनैतिक दलों को प्रशिक्षण देना शु कर देंगे. बड़े होटलों में भले सेमिनार शु हो जायेंगे.

जाहिर है इस धंधे में ज्यादा सोचने की गुंजाइश नहीं रहती. विचार बने-बनाये हैं और दृष्टि सुस्थिर. उत्तरी अफ्रीका और पश्चिमी ऐशया को ‘मध्य-पूर्व’ कहने की रवायत इस दृष्टि का परिचायक है. अगर भारत से देखें, तो इस क्षेत्र को‘मध्य-पश्चिम’कहना चाहिए. निगाह दक्षिण अफ्रीकी हो तो यह ‘उत्तर’ कहलायेगा और अगर लातिनी अमरीका के देश चिली में बैठे हों तो ‘पूवरेत्तर’. सिर्फ़ यूरोप में बैठकर ही इस इलाके को ‘मध्य-पूर्व’ कहा जा सकता है.यह दृष्टिदोष लोकतंत्र के स्थापित शास्त्र में घुस गया है. कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना. मसला दुनिया भर का है, लेकिन दृष्टि यूरोपीय है.

- Citizen Journalist
- Forum
- Railway Time Table
- Flight Details
- Jharkhand Politics

PK SPECIAL

लगातार 26 सालों से प्रभात खबर आम लोगों की बुलंद आवाज बना हुआ है. जन-जन के साथ एक अटूट रिश्ते से बंधे इस अखबार ने इस अवधि में समय-समय पर सफलता पूर्वक अपनी कई शाखाएं भी खोलीं है. इसी कड़ी में आज से प्रभात खबर का एक और सफल संस्करण भागलपुर से शुरू हुआ. इस नये संस्करण का हर पन्ना पूर्ण रूप से रंगीन है. इस तरह भागलपुर में प्रभात खबर को पहला संपूर्ण रंगीन अखबार होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है.

Other Headline

CHIEF EDITOR

- **फ़िर बिहार से नि...** आजाद भारत की राजनीतिक जड़ता को तोड़ा बिहार आंदोलन ने
- **अमरत्व की तलाश!**
- **लौटा दो हमें का...**
- **(4) सपने, संघर्...**

OTHER HEADLINE

- बजट ने उम्मीदों पर पानी फ़ेरा...
- अमरत्व की तलाश!...
- यह एक संतुलित रेल बजट...
- क्या कलीमुद्दीन भी रिहा होगा...
- लड़खड़ाते यूपीए के लिए मौका...
- गद्दाफ़ी भारत क्यों आते?...
- मत घबराइये इस महंगाई से...
- प्रधानमंत्री को छवि की चिंता...
- भविष्य बताते हैं उपनिषद...
- उस जीत का जवाब नहीं...
- एक‘लंगड़ी’सत्ता का राजधर्म...
- मुसलिम राजनीति की सीमाएं...
- मिस्र् मामले में क्या करे भारत...
- वैश्विक संकट या समृद्धि?...
- आधी-अधूरी क्रांतियों का युग...
- अपनी छवि के शिकार सौरभ...
- मिस्र् में इजरायली हित...
- लोकतंत्र का बायोडाटा...
- घोटालों पर छायी खामोशी...

लोकतंत्र के नाम पर अश्वेत दुनिया को यूरोप और उत्तरी अमरीका की जीवन शैली दिखायी जा रही है, पश्चिमी उदारवार की घुट्टी पिलायी जा रही, पूंजीवाद का व्याकरण सिखाया जा रहा है. तानाशाही या राजतंत्र तले पिस रही जनता के विद्रोह और उसकी आकांक्षाओं के विस्फ़ोट को एक विशेष दिशा में मोड़ा जा रहा है. जनता इस तयशुदा मॉडल के हिसाब से विद्रोह करने को तैयार न हो तो उसे बंदूक से तोड़ा जा रहा है.

इराक व अफ़गानिस्तान की तरह दुनिया के कई इलाकों में लोकतंत्र राजनैतिक स्वतंत्रता की जगह परतंत्रता का पर्याय बन चुका है. लोकतंत्र का स्थापित शास्त्र यह मान कर चलता है कि लोकतंत्र का विचार दुनिया को पश्चिमी सभ्यता की सौगात है.

दुनिया भर में नागरिक शास्त्र की पाठ्य-पुस्तकें प्राचीन एथेंस और अब्राहम लिंकन के हवाले से लिखी जाती हैं. इसे स्वयंसिद्ध मान कर चलती हैं कि लोकतांत्रिक व्यवस्था का मतलब है कमोबेश वही संस्थागत ढांचा, जैसा कि यूरोप और अमरीका के लोकतांत्रिक समाजों ने अपनाया. इस ढांचे में चुनाव हैं, प्रतिनिधि हैं, संसद है, उसके प्रति जवाबदेह सरकार है, कोर्ट-कचहरी है और अधिकारों की रक्षा करने वाला लिखित संविधान भी है.

लेकिन लोक और तंत्र के बीच बनी खाई को पाटने की कोई व्यवस्था नहीं है, स्वराज कि कोई गारंटी नहीं है. लोकतंत्र की इस समझ के चलते दुनिया भर में लोकतंत्र के नाम पर खानापूरी वाले निजाम कायम हो रहे हैं. स्वाधीनता की आकांक्षा को जल्द एक बने बनाये खांचे में ढाल दिया जाता है. अंतरराष्ट्रीय चौकीदारों की उपस्थिति में चुनाव हो जाते हैं.

जो तबका कल तक तानाशाही या राजतंत्र के नाम पर राज कर रहा था, उसी तबके के कुछ नये चेहरे लोकतंत्र के नाम पर राज करने लगते हैं. नये राज में जनता की आवाज सुनी जाती है या नहीं, इसकी किसे परवाह है. बस खेल खतम, डॉलर हजम. अभी से हम नहीं कह सकते कि मिस्र, ट्यूनीशिया और लीबिया में यही होगा. पर पूरी दुनिया में लोकतंत्र विस्तार की कहानी को देखें तो यही संभावना सबसे अधिक है.

यह त्रासदी अपने भयावह स्वरूप में इराक और अफ़गानिस्तान में देखी जा सकती है. लोकतंत्र के इस नाटक में लोगों को न तो स्वराज मिला न ही सुशासन, बल्कि जो रहा सहा राज-काज और अमन था वो भी जाता रहा. जब सोवियत संघ के टुकड़े हुए, उसके अधिकांश देशों में भी लोकतंत्र का ढकोसला हुआ, तरह-तरह की लोकतांत्रिक तानाशाहियां स्थापित हुईं, लोकतंत्र का इस्तेमाल एक बर्बर पूंजीवादी व्यवस्था को लादने के लिए किया गया.

नतीजतन लोकतंत्र का परचम अपनी आभा खो बैठता है. लोकतंत्र की हिमायत करने वाला एक छोटा सा आधुनिकता-पसंद अभिजात्यवर्ग होता है. जनता इस विचार से जुड़ नहीं पाती है. पाकिस्तान में पंजाब सूबे के गवर्नर सलमान तासीर की हत्या इसकी ताजा मिसाल है.

उदारपंथी सलमान तासीर अल्पसंख्यक समुदाय के लोकतांत्रिक हितों की रक्षा के लिए शहीद हुए, पर उनके हत्यारे के समर्थन में स्वत:स्फ़ूर्त जुलूस निकले, हजारों लोगों ने हत्यारे के साथ सहानुभूति जतायी. दूसरे देशों में इस अलगाव का फ़ायदा उठाकर शासक दावा करते हैं कि लोकतंत्र विदेशी विचार है.

इसलिए, जो लोग लोकतंत्र को सचमुच सार्वभौम विचार के रूप में स्थापित करना चाहते हैं उन्हें लोकतंत्र का नया शास्त्र गढ़ना होगा. लोकतंत्र के इस नये शास्त्र को गढ़ने में भारत एक विशिष्ट भूमिका अदा कर सकता है, बशर्ते कि हम भारतीय लोकतंत्र के भारतीय स्वरूप को चिह्नित करने और उसे अपनाने का साहस कर सकें.

लेखक सामयिक वार्ता के संपादक हैं

- **कुएं एवं खाई के बीच श्रम सुधार...**
- **जो दरिया झूम के उट्ठेंगे...**
- **एक झूठ का धराशायी होना...**
- **अरब जगत में परिवर्तन की आहट...**
- **कैंसर के खात्मे की बड़ी चुनौतियां...**
- **धराशायी होती मुसलिम तानाशाही...**
- **मिस्र् की आग का दूरगामी असर...**
- **ट्यूनीशिया में इतिहास का अंत...**
- **चुनाव सुधार या लोकतांत्रिक बदलाव...**

Contact Us | Advertisement | Archive | Todays News | Style Book | Corporate Mail

© Copyright of Prabhat khabar | Terms & Conditions of Reading | Privacy and Cookie Policy
Site best viewed in IE 6.0

Developed & Designed By